तुलसी प्रज्ञा २००५ ०७ (फोल्डर नं. ०२४५५१)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

श्रावकाचार आचार, आहार और विचार का विवेक – प्रो. प्रेम सुमन जैन ---------- १

श्रावकाचार तब और अब – जितेन्द्र बी. शाह ---------- १५

श्रावक – आचार की प्रासंगिकता का प्रश्न – प्रो. सागरमल जैन ----------२१

परिग्रह परिमाण व्रत आज भी प्रासंगिक है – डॉ. धर्मचन्द जैन ---------- ४६

आधुनिक युग में श्रावकाचार का अस्तित्व – डॉ. अनेकांत कुमार जैन ---------- ५३

गृहस्थाचार – परिपालन में नारी की भूमिका – श्रीमती डॉ. सरोज जैन ---------- ६३

श्रावकाचार गुण, लक्षण और अणुव्रत – डॉ. शेखरचन्द्र जैन ---------- ७४

श्रावकाचार और रात्रि भोजन विरमण व्रत - डॉ. अशोक कुमार जैन ---------- ८२

Acaranga – Bhasyam – Acarya Mahaprajna ---------- 91

Jain Kurumbers – M. D. Raghvan ---------- 103

A Note on the Worship of Images in Jainism – Priyatosh Baneerjee ---------- 110

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org